Note : If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

Pravachanasara

Folder No.	003289
Granth Name	Pravachanasara
Author	A N Upadhye
Publisher	Shrimad Rajchandra Ashram Agas
Edition	3
Year	1964
Pages	612

प्रवचनसार

फोल्डर नं.	००३२८९
ग्रन्थ	प्रवचनसार
लेखक	ए एन उपाध्ये
प्रकाशक	श्रीमद् राजचंद्र आश्रम अगास
आवृत्ति	३
प्रकाशन वर्ष	१९६४
पृष्ठ	६१२

मुख्य टाइटल

विषय सूचि

इस युगके महान् तत्त्ववेत्ता श्रीमद् राजचन्द्र ---------- ११
प्रथम आवृत्ति प्रस्तावना ---------- १९
द्वितीय आवृत्ति प्रकाशक का निवेदन ---------- २१
तृतीय आवृत्ति प्रकाश का निवेदन ---------- २२
Preface (Second Edition) ---------- 23
Editor’s Preface (Third Edition ---------- 27
Dedication ---------- 29
Introduction ---------- 1-120
Sri Kundakundacharya ---------- 1-10
Kundakunda’s Date ---------- 10-23
Kundakundas Work ---------- 23-46
Pravacanasara of Kundakunda ---------- 46-93
Commentators of Pravacanasara ---------- 93
Prakrit Dialect of Pravacanasara ---------- 106
Post Script : Additions ---------- 121
विषयानुक्रमणिका ---------- २७-३०
प्राकृत टेक्स्ट ---------- १-३४६
मंगलाचरणपूर्वक ग्रंथकर्ताकी प्रतिज्ञा ---------- २
ज्ञानाधिकार ---------- ६
वीतराग सराग चारित्र के उपादेयहेयका कथन ---------- ६
शुभादि भावों का फल ---------- ११

शुद्धोपयोगके बाद ही शुद्ध आत्मस्वभावकी प्राप्ति होती है -- १६
अतीन्द्रिय ज्ञान होने से सर्वप्रत्यक्षपना -- २७
ज्ञान की तरह आत्मा का सर्वगतत्वपना -- ३१
ज्ञानका अर्थों में और पदार्थों का ज्ञान में रहना इसका दृष्टान्त --- ३६
ज्ञान और ज्ञेयका स्वरूप -- ४३
अरहंतों के पुण्यका उदय बंधका कारण नहीं है, यह थन --- ५२
क्रिया का फल बंध नहीं है -- ६०
परोक्ष प्रत्यक्षका लक्षण -- ६८
परोक्षज्ञानीको यथार्थ सुख नहीं है --- ७४
शुभोपयोग से इंद्रिय सुख प्राप्ति -- ८१
पुण्य और पाप में समानता -- ८७
मोह सेना के जीतने का उपाय --- ९१
मोह का क्षय करना कर्तव्य है --- ९५
स्वपरभेद विज्ञानसे मोहका क्षय -- १००
आचार्य की धर्म में स्थित होने की प्रतिज्ञा-- १०४
ज्ञेयतत्त्वाधिकार --- १०८
स्वसमय परसमय का कथन --- ११०
द्रव्यके सत्पने का कथन --- १२१
भेदों के भेदों का लक्षण --- १३२
सत्ता और द्रव्य का परस्पर गुणगुणीपना -- १३७
असदुत्पादका पर्यायसे भेद --- १४३
जीव का पर्याय से अनवस्थितपना --- १५१
निश्चय से आत्मा द्रव्यकर्म का अकर्ता है --- १५५
द्रव्य में भेद, गुणके भेदसे है --- १६६
द्रव्यों के रहने का स्थान --- १७४
प्रदेश का क्षण --- १८०
प्राणों के पुद्गलीक पनेकी सिद्धइ --- १९०
आत्मा के स्वभाव का कथन -- १९५
परसंयोगके कारणका विनाश -- २००
शरीर भी जीवका स्वरूप नहीं है -- २११
बंध का स्वरूप --- २१८
अशुद्धात्माके लाभ का हेतु --- २३१
सर्वज्ञानीके ध्यानका विषय --- २३९
चारित्राधिकार
मंगलाचरणपूर्वक कर्तव्यकी प्रेरणा -- २४६
द्रव्य भावलिंगका लक्षण --- २५३
संयम भंग होने पर उसके जोड़नेका विधान -- २५९
छेदके भेद -- २६५
जिस परिग्रह का निषेध नहीं है, उसका स्वरूप --- २७३
योग्य आहार अनाहार तुल्य है -- २८१
मोक्षमार्गका मूल साधन आगम -- २९१
आगमज्ञानादि तीनों से मोक्षमार्ग --- २९७
आगमज्ञानादिकी एकता ही मोक्षमार्ग है --- ३०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवृत्ति के कालका नियम -- ३१५
उत्तम पात्रों की सेवा सामान्य विशेषपनेसे दो तरह की है -- ३२२
कुसंगतिका निषेध -- ३२७
शिष्यजनों को शास्त्रका फल दिखलाकर शास्त्रकी समाप्ति -- ३३५
टीकाओंकी समाप्ति --- ३४३
प्रशस्तियाँ --- ३४५
Pavayanasara (Text and Variant Readings) --- 347
Alphabetical Index of Pravacansara-gathas--- 373
Alpabetical Index of Quotation in the commentaries with their sources ------------------------- 378
Critial Apparatus-- 381
English Translation -- 384
Index--- 416
Index to Introduction --- 422

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org